उमेद रेखा

आयलो, बैठी आंगड़ रो, पवर खींची जात

आयलो दिन उगाले, ओसीं भोइगी रात

बात कोश। वार्ता - सवाई रवं. गांव सनावड़ा।

8-5-21. 200m0032. - 45:01

(ढोला मारु की बात) (1)

यह एक प्रेम कहानी है ढोले और मारु की है

राजा नल का गाँव नरवर कोट

राजा पिंगल का गाँव उजेन था

जो आपस में बहुत ही प्रेम हो गया था।

एक दिन किसी पेड़ के नीचे मिले तब

उन्होंने प्रेम के कारण वचन ले लिया।

राजा पिंगल ने कहा की अगर मेरे

घर लड़का या लड़की हुई तो हम

सम्बन्ध करेंगे।

तो राजा नल ने भी यही कहाँ।

इसी कारण ढोला मारु की प्रेम कहानी।

(1) राजा नल के घर जन्म लिया ढोले ने।

(2) राजा पिंगल के घर जन्म लिया मारु ने।
(ढोले जी ने दो सादी की थी
उसको पता नही था

(3) नल पिगंळ भेळा हुआ पारस पिपल
हेटं जद का स्गपन व्यापीया ढोलो मारु
पेट।

(मोळा वी)

(4) आज उमण-दुमण क्यों पोढ़ियाँ
लखरगो झोरो भीत, का स्रोरो मनड़ो
विसावर का थोनो पारस आज चीत।
(ढोलो ने कहाँ)

(5) आज उमण-दुमण म्हे पोढ़ीयाँ नख
सो झोरो झीत मारवल आई चीत।
(मारुनी ने कहाँ)

(5) आज अभेलो उढियों ग्यों करियोरी
ज्योकु कोर-कोर पो बड़ा नो ब ढोले ते
सासरीये रो स्रोकु।
(ढोले ने कहाँ)

(6) के गळ घातो मुगारा के गळ घातो
मुजार कोई स्रोत्तीयो मों करियों पुगळ
करो जवार।

(करिये ने कहाँ)

करिये ने कहाँ।

(7) में गळा हात गुगरा मे गळा हात मुआर हो सोन्हीयो मो करियो पुगळ करो जवार।

(ढाँले जी ने कहाँ)

(8) माता मईया न बोलियाँ तु क्यो बोलियो तेवणा तोड राग रयो भोगो पासलीआरो जोडा चुड. छे भोज।

(करिये ने कहाँ)

(9) छेजड. खावे पाणी पिये भारा ज गासा ऊँट हुँ लेहरी पेट उळोटियो पुगळा देवी पुँछ।

(मारवी ने कहाँ)

(10) करिया म्हारे बापरो म्हागो बचन सुणे ढाँलो सिधारे सासरे छोडो पाँव छार।

(करिये ने कहाँ)

(11) छोड़ा हुओ मनो डोम्भसे बधो भुख मरो जाओ ढाँले रे सासरे सकळा मुँगचरो।

(माळवी ने कहाँ)

(12) डोम्भो सोते सळाई चोपडो तेल चंपेल बोन्धो बड. री साखसो ताते तीरो नागर बेल।

माळवी ने कहाँ।

(13) तु बीचारी बोराड. की राता मोना बोर ठेला कर-का हारगी ढोलो ग्यो मु तोड.।

(मालवी ने भेजा सुए को)

(1) सूवा सूवा सूदट, केड़ी लायो बात मालवी तने मोकलो चाल ढोले रे साथ

सूवे ने कहा

ढोला तमीणे गोट मे अचरग बात हुई वो दीनो पग पाबाड़े लारे मालवी पी मुई

ढोले जी ने कहा

मारूवल य भलो ज हुवो जागमो सारू रो थाग लोवे चूणाई आरो री चोरवी देवो दाग

ढोलू जी ने कहा

दीन गयो दूर दुवारे वढ़ीया गा वतो कारी रवादे करीया ढोलो कई गुणो

करीया ने कहा

काट पगोर, ताकड़ा ढोलो सेाड मूवार जावो ढोले सासर घर घर करो जेवार

ठवड़ वाले ने बोला

जाडो पिडी धुगु धुगी डेडर पेटी नार ई मेरी रे कारने ढोला करीयो पत मार

ढोले ने कहा

बुबूडू मो ठक ठवड़ चरतो ठवड़ आरो अभन ढोले सिद्दावे सासरे जेरो मूरख भमावे यन

तोते ने कहा
आडा डूगर अनरवी धरा मई दइके सात
एक पीयर दुजी सासरे दोनो होसे राड़

तोते ने कहा
आडा डूगर अनरवी धरा मई झुटीयाली डूल
एक पीयर दुजी सासरे दोनो रहे गे दूर

खाती की (6) लडकी ने कहा
खेजड़ जी या कूपट काची तोड़ दू खाती री
धीवड़ी मारु महलो जोय

तोले ने कहा

थाणे मायं जाणा बाहिरी तु क्यों लीली जाण का
कुल तो सेवो संची का थारी जड़ पईचाण

(जाणा ने कहाँ)
थाणे माये जाणा बाहेरी हुं हो लीली जाणा तोलो
टोगरने तोलड़ा मारु टोगसे हार।

(तोते ने कहा)
चापाटे चारण भिखियाँ केऊ चडयो कीकोण
जे थण दीठी मारु तो तु बीडु करे बखोण
कड़ पतळी थळ जाड़ नाक-नेण अग तोला
तुम्हारी मारनी पाना सरवर री हंस।

चारण ने कहाँ
जोगणीयां मुग कळीयो दांते बतीस बोण
तोला तुम्हारी मारवी भणा टणण उभो भोजन

(ढोले ने कहाँ मारु को)

सो-सो बापीना पावती एक आफीणो पाप
गया ढोळवणी कोम्बड़ी मरे करिये रे मात
बाव ।

(मारु ने कहाँ ।

बड़ो खोड़ो कुओ मरण बार पाधार भो दूर
माल मरवल लपटी लाज मो सोमण बतारा सुर ।

(करियों ने कहाँ)

ओछा पीयों अकोख पीयो - पीयों काभल रे
कुए मारवल कोमड़ो बिछड़ से मुऍ

(मारवी ने कहाँ)

ढोल आरे देश मो हीना तीन रतन् एक ढोलो
दूजी मारवी तीजों करियों कसुम्बल रगा ।

(करियेक ने कहाँ)

काळे मावे सो मानमी, राते मावे सो ऊँट
मे ढोले रो गुण कियो बन्ध्यों सुखे ढुठ

कवि सवाई खॉन सत्तावड़ा